वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत चीन सम्बन्ध

डॉ० अंजलि मित्तल
एसोसिएट प्रोफेसर
सेंट जोजफ गर्ल्स डिग्री कॉलेज
सरधना, मेरठ
ईमेलः anjalimittal1745@gmail.com

सारांश

भारत और चीन विश्व की दो बड़ी उभरती शक्तियॉ है और दोनों ही देश एशिया और विश्व की सबसे बड़ी शक्ति बनने का सपना भी देख रही है। दोनों ही देशों की जनसंख्या 1 अरब से अधिक है जो कि विश्व की जनसंख्या का लगभग 36 प्रतिशत है। इन सब समानताओं के साथ चीन और भारत दोनों की जड़ों में मूलभूत अंतर है। जहां भारत एक लोकतांत्रिक देश है, वहां चीन में तानाशाही शासन है,भारत में मौलिक अधिकार और मानव अधिकार है परंतु चीन में ना तो मौलिक अधिकार है और ना ही वह मानव अधिकारों का पालन करता है,भारत शांति में विश्वास करता है तो चीन साम्राज्यवादी विस्तार वादी नीति में,भारत पड़ोसी देशों के क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करता जबकि चीन की नीति हमेशा ही पड़ोसी देशों की सीमाओं का अतिक्रमण और जमीन हड़पने की रही है। चीन पहले दूसरे देशों की जमीन पर छल कपट से कब्जा करता है और फिर शांति की बातें करने का ढोंग करता है। यही कारण है कि चीन की सीमाओं से 14 देशों की सीमाएं लगती हैं तथा पाकिस्तान को छोड़कर बाकी सभी देशों के साथ चीन का विवाद चल रहा है। वर्तमान में भारत और चीन के बीच सीमा विवाद भी चीन की साम्राज्यवादी, विस्तार वादी नीति का ही परिणाम है ।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 12.02.2022
Approved: 08.03.2022

डॉ० अंजलि मित्तल

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत चीन सम्बन्ध

RJPP Oct.21-Mar.22, Vol. XX, No. I,

pp.083-089
Article No. 9

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2022-vol-xx-no-1

भारत चीन सम्बन्ध इतिहास के झरोखे से

वर्तमान परिप्रेक्ष्य को समझने से पहले थोड़ा अतीत में जाना होगा। भारत **1947** में ब्रिटिश उपनिवेशवाद से आजाद हुआ और चीन में **1949** में माओ के नेतृत्व में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई थी। **1950** में भारत ने चीन की माओवादी सरकार को मान्यता प्रदान कर दी थी, संबंधों को और प्रगाढ़ बनाते हुए **अप्रैल 1954** में भारत और चीन के बीच **पंचशील समझौता** हुआ जिसमें दोनों देशों ने एक दूसरे की संप्रभुता, अखंडता का सम्मान करने का संकल्प लिया, दोनों देशों के बीच मित्रता का प्रतीक **हिंद चीन भाई–भाई** का नारा दिया गया लेकिन यह संबंध ज्यादा समय तक मधुर नहीं रह सके क्योंकि चीन ने **1957** में एक नक्शा प्रकाशित किया और भारत के कुछ हिस्सों को अपने नक्शे में दिखाया। **1959** में चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया जिसके कारण वहां के आध्यात्मिक धर्मगुरु दलाई लामा ने अपने अनुयायियों के साथ तिब्बत से भागकर हिमाचल के धर्मशाला में शरण ली। चीन ने भारत सरकार को दलाई लामा को वापस सौंपने की बात कही जिसे भारत सरकार ने मानने से इन्कार कर दिया क्योंकि भारत के नीति शांति और शरणागत की है।यहीं से **भारत चीन संबंधों में कटुता** आरंभ हो गई। इस कटुता का असर **20 अक्टूबर 1962** को सामने आया जब अचानक चीन ने भारत पर **आक्रमण** कर भारत चीन दोस्ती की पीठ में छुरा घोंप दिया। भारत इसके लिए तैयार नहीं था फिर भी हमारे सैनिकों ने चीनी सेनाओं का मुकाबला किया । यद्यपि भारत इस युद्ध में चीन से पराजित हो गया और अक्साई चीन का लगभग **30244 वर्ग किलोमीटर** हिस्सा चीन ने अपने कब्जे में कर लिया। इस हार के बाद भारत ने अपने आप को हर मोर्चे पर मजबूत किया जिसका असर **1967** में दिखा। **1967** में भारतीय सैनिकों ने मुंहतोड़ जवाब देते हुए लगभग **400 चीनी सैनिकों को मार गिराया था तथा उनके कई बंकरो को भी ध्वंस्त कर था** । रणनीतिक स्थिति वाले नाथुला दर्रे में हुई इस भिड़ंत की कहानी हमारे सैनिकों की शौर्य और वीरता की गाथा है। **1 अक्टूबर 1967** को चीन की **पीपुल्स लिबरेशन आर्मी** ने **चो ला इलाके** में फिर से भारत के सब्र की परीक्षा लेने का दुस्साहस किया पर वहा मुस्तैद **7/11 गोरखा राइफल्स एवं 10 जैक रायफल्स नामक भारतीय बटालियनों** ने इस दुस्साहस को नाकाम कर चीन को फिर से सबक सिखाया। ये दोनों ही सबक चीन को आज तक सीमा पर गोली बरसाने से रोकते हैं। तब से आज तक एक भी गोली सीमा पर नहीं चली है, भले ही दोनों देशों की फौज एक दूसरे की आंखों में आंखें डालकर सीमा की गश्त लगाने में लगी रहती हैं।

भारत चीन संबंधों मधुर बनाने के विभिन्न प्रयास– 1988 से 2020

1968 से 1988 तक भारत चीन संबंध ठंडे बस्ते में पड़े रहे **1988** में प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने, 1993 में प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने, **वर्ष 2003** में भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने चीन का दौरा किया तथा समय–समय पर दोनों पक्षों ने भारत–चीन संबंधों को मजबूत बनाने के लिए विभिन्न समझौतों पर हस्ताक्षर किए। **वर्ष 2015** में भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने चीन का दौरा किया इसके बाद चीन ने भारतीय अधिकारियों के लिए **नाथूला दर्रा** खोलने का फैसला लिया। **वर्ष 2018** में चीन के राष्ट्रपति तथा भारत के प्रधानमंत्री के बीच **वुहान में 'भारत चीन और अनौपचारिक शिखर सम्मेलन'** का आयोजन किया गया। **वर्ष 2019** में प्रधानमंत्री तथा चीन के राष्ट्रपति के बीच चेन्नई में **दूसरा अनौपचारिक शिखर सम्मेलन** आयोजित किया गया। इस बैठक में **प्रथम अनौपचारिक सम्मेलन** में बनी आम सहमति को और अधिक सुदृढ़ किया गया **वर्ष 2020 में**

भारत और चीन के बीच **राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70 वीं वर्षगांठ मनाई गई** तथा इसे भारत की **संस्कृति तथा पीपल टु पीपल संपर्क वर्ष** के रुप में भी मनाया गया।

भारत चीन के मध्य सीमा पर तनाव

चीन भारत के पड़ोसी देशों में नौसैनिक अड्डे बनाकर समुद्र के रास्ते भारत को घेरने की नीति अपना रहा है जिसे **'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स'** नाम दिया गया है उसके बदले में भारत ने भी **नेकलेस डायमंड योजना** पर कार्य शुरू कर दिया है जिसके अंतर्गत भारत भी ओमान, वियतनाम, जापान, सिंगापुर, ईरान और इंडोनेशिया के साथ मिलकर दक्षिण चीन सागर में चीन की संप्रभुता को चुनौती दे रहा है। चीन भारत को घेरने के लिए विभिन्न स्थानों पर अपने नौसैनिक अड्डे बना रहा है जैसे कि श्रीलंका में हबनटोटा, पाकिस्तान में ग्वादर पोर्ट। म्यंमार, बांग्लादेश, मालदीव में भी अपने सैनिक अड्डे बना रहा है। भारत ने भी ईरान और अफगानिस्तान के साथ मिलकर चाबहार पोर्ट ओमान में दक्म, इंडोनेशिया में सबंग पोर्ट का निर्माण कर चीन की चुनौती का जवाब दे रहा है।

भारत और चीन के बीच **'वन बेल्ट वन रोड'** पर भी विवाद है जो पाक अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरती है जिस पर भारत ने अपनी आपत्ति की है। पाकिस्तान ने पाक अधिकृत कश्मीर के गिलगिट बालटिस्तान में स्थित शक्सगाम वादी, जिसका एरिया लगभग 5800 वर्ग किलोमीटर है, चीन को सौंप दिया है जिसका भारत ने कड़ा विरोध जताया परन्तु भारत के विरोध के बाद भी चीन का यहां पर सड़क निर्माण कार्य जारी है।

पाकिस्तान को छोड़कर चीन की अपने किसी पड़ोसी देश से नहीं बनती है। दक्षिण चीन सागर का मसला हो या डोकलाम विवाद, उसकी विस्तार वादी नीतियों का विरोध करने वाले हर देश पर आग उगलता रहता है। भारत को इस स्थिति का लाभ उठाना चाहिए तथा चीन के इन दुशमनों से दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहिए। भारत को अब जापान मलेशिया वियतनाम समेत कई चीन विरोधी देशों से अपने सैन्य संबंध मजबूत करने चाहिए।

वर्तमान में 5 मई 2020 को भारत और चीन के बीच उपजा सीमा विवाद कोई नई घटना नहीं है। इन दोनों देशों में सीमा पर विवाद चलता ही रहता है वर्तमान टकराव का मुख्य कारण है कि भारत और चीन के बीच 3488 किलोमीटर लंबी सीमा रेखा जिसे एलएसी लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल कहा जाता है जिसका अभी तक विधिवत सीमांकन नहीं हुआ है एलएसी पर कुल आठ फिंगरनुमा पहाड़िया है तथा गतिरोध का सबसे बड़ा पॉइंट ही **फिंगर–4** है। यहां पर चीनी सैनिक बड़ी संख्या में डटे हैं। पहले भारतीय सैनिक फिंगर–8 तक पेट्रोलिंग पर जाते थे लेकिन दावा है कि **एलएसी फिंगर–8** से गुजरती है। मौजूदा गतिरोध शुरू होने की वजह **पैंगोंगत्से झील** के आसपास फिंगर क्षेत्र में भारत की ओर से एक महत्वपूर्ण सड़क निर्माण का चीन द्वारा तीखा विरोध किया गया है।

गलवान घाटी में भी दरबुक–शायोक– दौलत बेग ओल्डी मार्गको जोड़ने वाली एक और सड़क के निर्माण पर चीन के विरोध के बाद गतिरोध बना हुआ है।पैंगोंगत्से के फिंगर क्षेत्र में सड़क निर्माण और उस सीमित क्षेत्र भारतीय जवानों के गश्त करने के लिहाज से अहम माना जाता है। भारत ने पहले ही तय कर लिया है कि चीनी विरोध की वजह से वह पूर्वी लद्दाख में अपनी किसी सीमावर्ती आधारभूत परियोजना को नहीं रोकेगा। भारत ने सामरिक महत्व के पूर्वी लद्दाख में पैंगोंगत्से में सड़क निर्माण किया तो उससे चीन बौखला गया और विवाद उत्पन्न हो गया। गलवान घाटी में 15 जून

2020 की रात्रि में भारतीय सैनिकों के बीच झड़प की एक वजह है कि भारत वास्तविक नियंत्रण रेखा तक तेजी से अपनी क्नेक्टिविटी बढ़ा रहा है, नई सडकें बना रहा है तथा दुर्गम हिमालय क्षेत्र में आधारभूत ढांचे को मजबूत कर रहा है जबकि चीज ऐसी तैयारी पहले ही कर चुका है तब भारत ने उस पर कोई टीका टिप्पणी नहीं की थी लेकिन अब यह चीन की आंख की किरकिरी बना हुआ है और एक बड़े विवाद में परिलक्षित हो रहा है।

अभी हाल ही में चीन ने एक और उकसावे की कार्रवाई की जब उसने गलावन को लेकर दुष्प्रचार किया। ऐसा लगता है कि 2022 में भी चीन भारत के साथ रिश्ते सामान्य बनाने को तैयार नहीं दिखता, एक तरफ दोनों देशों की सेनाएं वास्तविक नियंत्रण रेखा पर एलएसी पर मिठाई आदान प्रदान करती हैं दूसरी ओर चीन समर्थित एवं सरकारी नियंत्रित मीडिर्या ने इंटरनेट साइट पर गलवान घाटी को लेकर एक फर्जी वीडियो जारी किया। उक्त वीडियो की सच्चाई जल्द ही पता चल गई। यह एक फर्जी वीडियो था जो तथा गलवान नदी से करीब 28 किलोमीटर दूर अक्साई चीन के करीब फिल्माया गया वीडियो था जिसे चीन ने राष्ट्रवाद के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया था जो उनकी दुषित मानसिकता को दर्शाता है। भारत चीन की इस तरह की प्रत्येक चाल का समय समय पर मुंह तोड़ जवाब दे रहा है और मजबूती से सीना तानकर चीन के समक्ष समकक्ष खड़ा है। ऐसी घटनाओं की वजह से भारत चीन संबंध आज अपने सबसे नाजुक दौर से गुजर रहे हैं तथा रिश्तो में दरार दिन प्रतिदिन चौड़ी हो रही है।

अभी हाल ही में **30 दिसंबर 2021 क**ो चीनी सरकार ने एक नक्शा जारी किया जिसमें अरुणाचल प्रदेश के 15 स्थानों का चीनी नामकरण कर उकसावे की कार्रवाई की। इससे पहले **2017** में चीन ने अरुणाचल प्रदेश के सात स्थानों को का चीनी नामकरण किया था अबकी बार की घोषणा ज्यादा खतरनाक है क्योंकि यह घोषणा चीन ने एक नये कानून के तहत की है जो **1 जनवरी 2021** से लागू हो गया है। चीन ने यह भी दावा किया है कि अबकी बार की घोषणा मात्र घोषणा नहीं है बल्कि नए कानूनों का हिस्सा है। इसी कानून के अंतर्गत अब चीनी सेना को अरुणाचल प्रदेश के सभी इलाकों पर कब्जा करने का विधिवत रूप से आदेश दिया गया है। अब प्रश्न यह है कि चीन की इस कार्रवाई के बाद क्या भारत सरकार को मात्र एक टिप्पणी करके शांत बैठ जाना चाहिए या कठोर कार्यवाही करनी चाहिये।

इसी के साथ चीनी दूतावास के राजनैतिक काउंसलर झाउ योंग शेंग यू ने भारतीय सांसदों को भी आपत्तिजनक पत्र लिखकर भारतीय अस्मिता को चुनौती दी है तथा पत्र द्वारा चेतावनी दी है कि भारत सरकार तिब्बत की निर्वासित सरकार से किसी तरह की बातचीत ना करें। यही चीन की दादागिरी का पराकाष्ठा है जिसका भारत सरकार को पुरजोर तरीके से प्रतिकार करना चाहिए तथा भारत को चीन को **मोस्ट फेवर्ड नेशन के बजाय उसे अब दुश्मन समझ कर व्यवाहर करना होगा** क्योंकि चीन ना तो बातचीत से मामले को सुलझाने के लिए तैयार होता है और ना ही अपनी आक्रमणकारी रवैया को त्याग कर सकारात्मक रुख अपनाता है। इसलिए भारत को अपनी आत्मघाती आदर्शवाद की नीति को छोड़ना होगा और चीन से मुकाबला करने के लिए ना केवल सैनिक तैयारी बल्कि कूटनीतिक चालों को भी अपनाना होगा। भारत को इतिहास से सबक लेना चाहिए जैसे शिवाजी महाराज ने अपनी तैयारी एवं अदम्य सहास से **स्वयं को अफजल खॉ से बचाया था वैसे ही भारत को धूर्त अफजल रूपी चीन से स्वयं को बचाना होगा।**

भारत चीन संबंधों मधुर बनाने के विभिन्न सुझाव

भारतीय प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में स्पष्ट कर दिया है कि भारत अपनी 1 इंच जमीन भी नहीं छोड़ेगा और हर हाल में देश के स्वाभिमान की रक्षा करेगा। भारत को चीन से न केवल सतर्क रहना होगा बल्कि नियंत्रण रेखा पर अपनी चौकसी भी बढ़ानी होगी क्योंकि चीनी सेना पुनः हरकत कर सकती है। इससे पहले भी 2017 में चीन और भारत के बीच 73 दिन तक डोकलाम विवाद चला था जिसमें बाद में चीन को पीछे हटना पड़ा था।

- भारत को चीन की विस्तार वादी नीति के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय होने के साथ ही भारत को चीन से पीड़ित देशों के साथ भी खड़ा होना होगा और चीन को यह बताने का समय आ गया है कि वह अपनी शर्तों पर रिश्ते कायम नहीं कर सकता। भारत को भी कूटनीतिक एकता का परिचय देते हुए चीन के नापाक मंसूबों को विफल करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच पर तिब्बत का मामला जोर–शोर से उठाकर चीन को नैतिक मार देनी चाहिए।
- इस समय भारत के लिए श्रेष्ठ विकल्प यह है कि उसे एलएसी से लगे क्षेत्रों में निर्माण कार्य को यथासंभव जारी रखते हुए भी समस्या के कूटनीतिक समाधान के लिए हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए।
- क्योंकि युद्ध दोनों ही देश नहीं चाहते। हम सभी जानते हैं कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। युद्ध में विनाश होता है और युद्ध के अंत में भी संधि समझौते किए जाते हैं इसलिए युद्ध का रास्ता ना अपनाते हुए शुरू में ही बातचीत और समझौते के माध्यम से वास्तविक स्थिति को बनाए रखना दोनों देशों की ही जिम्मेदारी है। यह साम्यवादी चीन की धूर्तता की पराकाष्ठा है कि वह भारतीय क्षेत्र में अतिक्रमण भी करता है फिर भारत को शांति बनाए रखने का उपदेश देते हुए पीछे हटने से इंकार करता है।
- गलवान घाटी की घटना यही बता रही है कि पानी सिर के ऊपर से बहने लगा है। मित्रता की आड़ में शत्रुता पूर्ण रवैया का परिचय देना और भारत को नीचा दिखाना चीन की आदत बन गई है। अब चीन को यह पता चलना ही चाहिए कि वह दादागिरी के बल पर भारत में अपने रिश्ते काम नहीं कायम नहीं कर सकता। जब चीन भारतीय हितों की कोई परवाह नहीं कर रहा हो तो फिर भारत उसके हितों की चिंता क्यों करें।
- भारत को अपने देश की सुरक्षा के लिए सीमावर्ती चौकसी के साथ अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी अपना पक्ष मजबूती से रखना होगा। भारत को अमेरिका जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर चतुष्कोण संवाद एवं सुरक्षा तंत्र क्वाड की संकल्पना को जमीन पर उतारने के काम में लग जाना चाहिए तथा शंघाई सहयोग परिषद जैसे मंच से बाहर निकलना चाहिए।
- चीन के प्रतिकार का सबसे सही तरीका यह है कि भारत खुद को आर्थिक एवं सैन्य रूप से सबल बनाएं जिसके लिए आत्मनिर्भर भारत अभियान को वास्तव में जमीन पर उतारना होगा। देश के आत्मनिर्भर अभियान को सफल बनाने के लिए देश की जनता को भी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। **आत्मनिर्भर** भारत बनाने के लिए चीन के साथ अपने व्यापार को कम करके अपने यहां उत्पादन बढ़ाना चाहिए। 21वीं सदी के प्रारंभ से अब तक भारत और चीन के बीच होने वाला व्यापार 3 बिलीयन डॉलर से बढ़कर लगभग 100 बिलीयन डॉलर हो गया है। चीन के साथ आयात कम कर के अपने व्यापार घाटे को कम करना होगा। देश की जनता चीनी वस्तुओं का प्रयोग कम करें तथा

अधिक से अधिक देशी वस्तुओं का प्रयोग करना होगा तभी प्रधानमंत्री के संकल्प **वोकल फोर लोकल** और आत्मनिर्भर अभियान को सफलता मिलेगी।

- वैश्विक महामारी के प्रचार–प्रसार ने विश्व के लगभग सभी देशों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है चाहे विकसित देश हो या विकासशील देश सभी इस बीमारी की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं तथा सभी अपने अपने तरीके से इस बीमारी को समाप्त करने के लिए प्रयास कर रहे हैं। कोविड–19 की विषम परिस्थितियों में चीन की अन्य देशों के साथ संबंधों में कटुता आई है, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया, अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन उससे नाराज हैं, विश्व के विभिन्न राष्ट्र अपनी कंपनियों को चीन से हटाकर कहीं और लगाना चाहते हैं भारत को इस परिस्थिति का भी लाभ उठाना चाहिए और **आत्मनिर्भर अभियान** के अर्न्तगत ऐसी कंपनियों का भारत में स्वागत करना चाहिसे। यदि चीन भारत के साथ विवाद उत्पन्न कर विकसित देशों को यह संदेश देना चाहता है कि भारत में निवेश करना ठीक नहीं होगा तो भारतीय कंपनियों को अधिक सक्रियता दिखानी होगी। अपनी उत्पादकता एवं गुणवता में सुधार करना होगा यही समय की मांग है।
- साम्यवादी चीन की बौखलाहट का एक कारण यह भी है कि 17 अप्रैल 2020 को भारत सरकार ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के नियमों को सख्त बना दिया है। इसी कड़ी में भारत ने कुल 267 चीनी एप्स को भी प्रतिबंधित किया है जिसमें एक मुख्य एप टिक टॉक है जिसको बैन करने से चाइनीस कंपनी को लगभग 700 करोड रुपये की हानि अनुमानित है।
- सड़क परिवहन मंत्री ने यह घोषणा की है कि कोई भी चाइनीस कंपनी रोड में प्रोजेक्ट में हिस्सा नहीं लेगी। इसी तरह चीन का हर क्षेत्र में प्रतिकार होना चाहिए।
- भारत को चीन से ना केवल सतर्क रहना होगा बल्कि नियंत्रण रेखा पर अपनी चौकसी भी बढानी होगी क्योंकि चीनी सेना पुनः हरकत कर सकती है। भारत को चीन से सावधान रहने के साथ ही उसके विस्तार वादी रवैया प्रतिकार करने के लिए भी तैयार रहना होगा चीन के प्रतिकार का सबसे बड़े सही तरीका यह है कि भारत खुद को आर्थिक रूप से सफल बनाएं। तानाशाही चीनी नेतृत्व को यह संदेश देने की सख्त जरूरत है कि ताली एक हाथ से नहीं बज सकती। भारत को चीन से सावधान रहने के साथ ही उसके विस्तारबादी रवैया का हर मोर्चे पर चाहे वह आर्थिक हो सैन्य हो, कूटनीतिक हो प्रबलता से प्रतिकार करना होगा।

कोरोना संकट के दौरान चीन ने अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति एवं अपनी कमियों को छुपाने के लिए कई मोर्चे खोल दिए हैं। हांगंकाग, ताइवान से लेकर दक्षिण एवं पूर्वी चीन सागर और हिमालय क्षेत्र में भारत के साथ टकराव बढा कर अपनी नव साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं का परिचय दिया है। वर्तमान में चीनी शासन ने पूरी दुनिया को असुरक्षित कर दिया है। परंतु इसके बाद भी चीनी आक्रमक्ता दिनों दिन बढ़ती जा रही है। महाशक्ति अमेरिका की मेहरबानी से जिस चीन का आर्थिक कायापलट हुआ था आज वही चीन राष्ट्रपति शी जिनपिंग की सरपरस्ती में उसी अमेरिका को ही आंखें दिखा रहा है। आज चीन भले ही एक आर्थिक ताकत हो परंतु उसका कोई सच्चा मित्र नहीं है। चीन तिब्बत की तर्ज पर हांगंकाग को पूरी तरह से अपने कब्जे में करने का करने की कोशिश कर रहा है। यद्यपि अंतरराष्ट्रीय जगत इसका विरोध कर रहा है।

चीन पाकिस्तान और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का समर्थन करता है जो भारत और चीन के संबंधों पर विपरीत प्रभाव डालता है। यदि भारत और चीन को संबंध मजबूत बनाने है तो चीन

को आतंकवादी पाकिस्तान का साथ देना बंद करना होगा। भारत की सरकार ने अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 को समाप्त करके जम्मू कश्मीर और लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश बना दिए थे जिसका पाकिस्तान के साथ चीन ने भी कड़ा विरोध किया और इसे अपनी संप्रभुता पर खतरा मानते हुए उसने इस मामले को संयुक्त राष्ट्र परिषद में भी उठाया था जिसका भारत ने खंडन किया और स्पष्ट किया कि वह भारत का आंतरिक मामला है।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों का तो यही यथार्थवाद सिद्धांत है कि जो **मार्गेन्थाउ** ने भी दिया था कि प्रत्येक राष्ट्र सबसे पहले अपने राष्ट्रीय हितों को देखें तथा समय, काल और परिस्थिति के अनुसार राष्ट्रीय हितों के अनुकूल निर्णय ले। चीन के साथ शक्ति संतुलन बनाने के लिए भारत को अपनी क्षमताओं को भी बढ़ाना होगा। अगर चीन भारत से दोस्ती चाहता है तो उसे भारत का अंतरराष्ट्रीय मंच पर समर्थन करना होगा क्योंकि ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती। भारत शांति चाहता है युद्ध नहीं लेकिन भारत सरकार की नीति स्पष्ट है कि अगर कोई उसे आंख दिखाएगा तो उसका जवाब उसी भाषा में दिया जायेगा। चीन शक्ति की भाषा जानता है इसलिसे भारत सरकार को **तुलसीदास जी के दोहे को याद रखना चाहिए कि ''भय बिन होय न प्रीती''** और चीन के साथ कठोर भाषा में ही बात करनी चाहिए।

भारत और चीन यदि आपस में शांति और मित्रता के साथ एक दूसरे के साथ सहयोग करें तो दोनों ही देशों की आर्थिक हितों की रक्षा होगी जिससे विकास कार्यों में गजब की तेजी लाई जा सकती है। एशिया पुनः एक बार विश्व का वित्तीय केंद्र और आर्थिक धुरी बन सकता है। इस बड़े लक्ष्य की को पाने के लिए चीन और भारत दोनों को अपने छोटे–छोटे मतभेदों को भुलाना होगा। परंतु यह भी सत्य है कि एक बार यदि रिश्तो में खटास आ जाए और भरोसा टूट जाए तो चाहे असंख्य प्रयास और अनेक दशक भी नाकाफी होते हैं रिश्तों की खटास मिटाने के लिए। यह कहा जाता है कि जहां संदेह होते हैं वहां संबंध नहीं होते इसलिए किन्ही दो राष्ट्रों में मित्रता से पहले यह जरूरी है की आपस में विश्वास हो। बिना विश्वास व्यापार तो हो सकता है किंतु मित्रता नहीं। प्रत्येक हिंदुस्तानी के मन में अभी भी एक प्रश्न है कि क्या चीन पर भरोसा किया जा सकता है? यद्यपि सीमा पर शान्ति बनाये रखने के लिये दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों के बीच बातचीत चल रही है परन्तु 14 दौर की वार्ता के बाद भी कोई ठोस परिणाम निकलता नजर नही आ रहा।

चीन ना तो द्विपक्षीय समझौतों का सम्मान करता है और ना ही अंतरराष्ट्रीय संधियों का पालन करता है। अतः अब चीन के साथ अपने संबंधों को पुनः परिभाषित करने का समय आ गया है।

संदर्भ

1. शौरी, अरुण. *भारत चीन संबंध.* प्रभात प्रकाशनः नई दिल्ली।
2. पंत, डॉक्टर पुष्पेश. *अंतरराष्ट्रीय संबंध.* मीनाक्षी प्रकाशनः मेरठ।
3. फाड़िया, बी. एल. *अंतरराष्ट्रीय संबंध.* साहित्य भवन पब्लिकेशनः आगरा।
4. गुप्ता, मानिक चंद. *भारत–चीन कूटनीतिक संबंध.* अटलांटिक पब्लिशर्सः दरिया गंज दिल्ली।
5. भारद्वाज, प्रवीण. और मिश्रा, केशव. *20 वीं सदी में भारत चीन संबंध.* कल्पाज पब्लिकेशनः नई दिल्ली।